ब्लू फिल्म

गौरव सोलंकी

जिस तरह जरूरी नहीं कि चाट पकौड़ियों की सभी कहानियां करण जौहरीय अंदाज में चांदनी चौक की गलियों से ही शुरू की जायें या बच्चों की सब कहानियां 'एक बार की बात है' से ही शुरू की जायें या गरीबी की सब कहानियां किसानों से ही शुरू की जायें या कबूतरों की सब कहानियां प्रेमपत्रों से ही शुरू की जायें, उसी तरह जरूरी नहीं कि सच्चे प्रेम की सब कहानियां सच से ही शुरू की जायें। इसीलिए मैंने रागिनी से झूठ बोला कि वही पहली लड़की है, जिससे मुझे प्यार हुआ है। ऐसा कहने से तुरंत पहले वह अपने विश्वासघाती प्रेमी की कहानी सुनाते सुनाते रो पड़ी थी। 'तुम रोते हुए बहुत सुंदर लगती हो', यह कहने से मैंने अपने आपको किसी तरह रोक लिया था। फिर मैंने उसके लिए एक लैमन टी मंगवायी थी। मैंने सुन रखा था कि लड़कियों को खटाई पसंद होती है, खाने में भी और रिश्तों में भी।

उसे कोई मिनर्वा टाकीज पसंद था। मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि यह इमारत दुनिया के किस कोने में है। वह देर तक उसके साथ वहां बिताये हुए खूबसूरत लम्हे मुझे सुनाती रही। बीच में और एकाध बार मैंने दोहराया कि वही पहली लड़की है, जिससे मुझे प्यार हुआ है। मेरी आंखें उसकी गर्दन के आसपास कहीं रहीं, उसकी आंखें हवा में कहीं थीं। मैंने सुन रखा था कि लड़कियों के दिल का रास्ता उनकी गर्दन के थोड़ा नीचे से शुरू होता है। मैं उसी रास्ते पर चलना चाहता था। वैसे शायद सबके दिल का रास्ता एक ही जगह से शुरू होता होगा। सबका दिल भी एक ही जगह पर होता होगा। मैंने कभी किसी का दिल नहीं देखा था, लेकिन मैं फिर भी इस बात पर सौ प्रतिशत विश्वास करता था कि दिल सीने के अंदर ही है। हम सबको इसी तरह आंखें मूंद कर विश्वास करना सिखाया गया था। हम सब मानते थे कि जो टीवी में दिखता है, अमेरिका सच में वैसा ही एक देश है। यह भी हो सकता है कि अमेरिका कहीं हो ही न और किसी फिल्म की शूटिंग के लिए कोई बड़ा सेट तैयार किया गया हो, जिसे अलग अलग एंगल से बार बार हमें दिखाया जाता रहा हो। जो लोग अमेरिका का कह कर यहां से जाते हों, उन्हें और कहीं ले जाकर कह दिया जाता हो कि यही अमेरिका है और फिर इस तरह एमिरलैण्ड अमेरिका बन गया हो। क्या ऐसा कोई वीडियो या तस्वीर दुनिया में है, जिसमें किसी देश के बाहर 'अमेरिका' का बोर्ड लगा दिखा हो? लेकिन टीवी में देख कर विश्वास कर लेना हमारी नसों में इतने गहरे तक पैठ गया था कि कुछ लोग अमेरिका न जा पाने के सदमे पर आत्महत्या भी कर लेते थे। ऐसे ही कुछ लोग प्रेम न मिलने पर भी मर जाते थे, चाहे प्रेम सिर्फ एक झूठी अवधारणा ही हो।

लेकिन डॉक्टर समझदार थे। कभी पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में नहीं लिखा गया कि अमुक व्यक्ति प्यार की कमी से मर गया। यदि दुनिया भर की आज तक की सभी पोस्टमॉर्टम रिपोर्टें देखी जायें तो यही निष्कर्ष निकलेगा कि दुनिया में हमेशा प्यार बहुतायत में रहा। लोग सिर्फ कैंसर, पीलिया,

www.tadbhav.com

हृदयाघात और प्लेग से मरे।

वह एक पुराना शहर था जिसे अपने पुराने होने से उतना ही लगाव था जितना वहां की लड़कियों को अपने पुराने प्रेमियों से। रागिनी ने मुझे समझाया कि लड़के कभी प्यार को नहीं समझ सकते। मैंने सहमति में गर्दन हिलायी। गर्दन के थोड़ा नीचे मेरे दिल तक जाने वाला रास्ता भी उसके साथ हिला। फिर हम एक मंदिर में गये, जिसके दरवाजे पर कुछ भूखे बच्चे बैठे हुए थे। अंदर एक आलीशान हॉल में सजी संवरी श्रीकृष्ण की मूर्ति के सामने वह सिर झुकाये कुछ बुदबुदाती रही। मैं इधर उधर देखता रहा। जब हम लौटे तो भूखे बच्चे भूखे ही बैठे थे। उनमें से एक ने दूसरे को एक भूखी गाली दी, जिस पर भड़क कर दूसरे ने पहले के पेट पर एक भूखा घूंसा मारा। और बच्चे भी लड़ाई में आ मिले। वहां भूखा झगड़ा होता रहा। अपने में खोयी रागिनी ने यह सब नहीं देखा। मैंने जब उसे यह बताया तो उसने कहा कि भूख बहुत घिनौना सा शब्द है और कम से कम मंदिर के सामने तो मुझे मर्यादित भाषा का प्रयोग करना चाहिए। यह सुन कर मेरा एक भूखा सपना रोया। मैं हंस दिया।

वहीं पास में एक सफेद पानी की नदी थी जो दूध की नदी जैसी लगती थी। सर्दियों की रातों में जब उसका पानी जमने के नजदीक पहुंचता होगा तो वह दही की नदी जैसी बन जाती होगी। उस नदी के ऊपर एक लकड़ी का पुल था जिस पर खड़े होकर लोग रिश्ते तोड़ते थे और दो अलग अलग दिशाओं में मुड़ जाते थे। उस पुल का नाम रामनाथ पुल था। मुझे लगता था कि रामनाथ बहुत टूटा हुआ आदमी रहा होगा।

हम उस पुल के बिल्कुल बीच में थे कि एकाएक रागिनी रुक कर खड़ी हो गयी। रिश्ते टूटने वाला डर मुझे चीरता हुआ निकल गया। वह पुल के किनारे की रेलिंग पर झुकी हुई थी। फिर उसने कुछ पानी में फेंका, जो मुझे दिखा नहीं।

मैंने कहा– रागिनी, तुम ही दुनिया की एकमात्र ऐसी लड़की हो, जिससे प्यार किया जा सकता है।

वह गर्व से मुस्कुरायी। वह मुस्कुरायी तो मुझे अपने कहने के तरीके पर गर्व हुआ।

वह एक खूबसूरत शाम थी, जिसमें एक अधनंगी पागल बुढ़िया पुल पर बैठ कर ढोलक बजा रही थी और विवाह के गीत गा रही थी। कॉलेज में पढ़ने वाले कुछ लड़के वहां तस्वीरें खिंचवा रहे थे। रागिनी ने अपना दुपट्टा हवा में उड़ा दिया जो सफेद पानी में जाकर गिरा। उसका ऐसा करना उन लड़कों ने अपने कैमरे में कैद कर लिया। चार लड़कों वाली फोटो के बैकग्राउंड में दुपट्टा उड़ाती रागिनी।

उन चारों लड़कों को उससे प्यार हो गया था। वे जीवन भर वह तस्वीर देख कर उसे याद करते रहे। उन्होंने एक दूसरे को यह कभी नहीं बताया।

फिर रागिनी ने अपना मुंह मेरे कान के पास लाकर धीरे से कहा कि वह मुझे कुछ बताना चाहती है। उसके कहने से पहले ही मैंने आंखें बंद कर लीं। उसने हाथ हवा में उठा कर कोई जादू किया और उसके हाथ में शादी का एक कार्ड आ गिरा। वह जादू जामुनी रंग का था जिस पर लिखा था – 'रागिनी संग विजय'।

यह बहुत पहले ही किसी ने तय कर दिया था कि सब शादियों के निमंत्रणपत्र गणेश जी के चित्र से ही शुरू किये जायें। कहानी यहीं से आरम्भ हुई।

मार्च की बारह तारीख को उन दोनों की शादी हो गयी। मार्च की बारह तारीख को बृहस्पतिवार था। मैं उदास था। मेरा मन नहीं लगता था। मैंने कोई नौकरी कर लेने की सोची। साथ ही मैंने सोचा कि नौकरी करके आज तक कोई करोड़पति नहीं बना इसलिए नौकरी वौकरी में कुछ नहीं रखा है। मेरा एक बार कश्मीर घूम आने का मन था, थोड़ी सी जल्दी भी थी। अखबार में रोज युद्ध की सम्भावना की खबरें आती थीं। और मैं कश्मीर के उस पार या आसमान के पार चले जाने से पहले उसे एक बार

www.tadbhav.com

देख लेना चाहता था। मेरे पास पैसे नहीं थे। मेरे पिता स्कूल मास्टर थे। वे 'धरती का स्वर्ग' नामक पाठ पढ़ाते हुए कश्मीर का बहुत अच्छा वर्णन करते थे लेकिन मुझे लगता था कि उन्होंने कभी कश्मीर के बारे में सोचा नहीं होगा। अशोका पास बुक्स वाले उन्हें हर कक्षा की एक 'ऑल इन वन' उपहार में दे जाते थे तो उन्हें बहुत खुशी होती थी। लेकिन वे जोर से नहीं हंसते थे। उनके पेट में दर्द रहने लगा था। जब हम छोटे थे तो वे कभी कभी गुस्से में बहुत चिल्लाते थे। मां कहती थी कि उस चिल्लाने की वजह से ही उनके पेट में दर्द रहने लगा है। डॉक्टर उसे अल्सर बताते थे। डॉक्टरों को लगता था कि वे सब कुछ जानते हैं। मां को भी अपने बारे में ऐसा ही लगता था।

डॉक्टर बनने के लिए बहुत सालों तक चश्मा नाक पर टिका कर मोटी मोटी किताबें चाट डालनी पड़ती थीं। हमारे राज्य में उन दिनों पांच मेडिकल कॉलेज थे जिनमें छः सौ सीटें थीं। जनरल के लिए कितनी सीटें थीं, यह पता लगाने के लिए बहुत हिसाब किताब करना पड़ता था। अधिसंख्य लोग जनरल ही थे। बाकी लोगों में से कोई खुल कर अपनी जाति नहीं बताता था इसलिए भी ऐसा लगता होगा कि ज्यादातर लोग जनरल ही थे। ब्राह्मण दोस्त के सामने कुम्हार दोस्त कुछ दबा सा रहता था लेकिन फिर भी अपना कुम्हार होना, अपने अछूत होने जितना शर्मनाक नहीं लगता था। बनिया होना परीक्षा में मुश्किल से पास होना था लेकिन फिर भी बनिया होना खुल कर स्वीकार किया जाता था।

हमारे कस्बे में एक बहुत विश्वसनीय अफवाह थी कि उस परीक्षा की तैयारी करते करते एक लड़की पागल भी हो गयी थी। उस लड़की का नाम किसी को नहीं पता था। किसी को पता होता तो मैं उससे एक बार मिलना चाहता था। वह लड़की किस जाति की थी, यह भी पता नहीं चल पाता था।

मां कानों के हल्के से कुंडलों और चांदी की घिसी हुई पायलों के अलावा कोई गहना नहीं पहनती थी। मां को गहने न पहनने का शौक हो गया था। मुझे सिनेमा न जाने का शौक हुआ था और मेरी बहन लता को अचानक नये कपड़े न खरीदने का शौक हो गया था। उसकी उम्र तेईस साल थी। वह एमएससी करके घर बैठी थी और ब्यूटी पार्लर का काम सीख रही थी। कुछ न कुछ करते रहना एक जरूरी नियम था। वह पच्चीस तरह से साड़ी बांधना सीख गयी थी। मुझे एक ही तरह से पैण्ट पहननी आती थी। कभी कभी उसमें भी टांगें देर तक फंसी रहती थीं। मैं बीएड कर चुका था और नयी सरकार के इंतजार में था। मुझे उम्मीद थी कि नयी सरकार आयेगी तो थर्ड ग्रेड की खूब भर्तियां निकलेंगी। विधानसभा चुनाव होने में एक साल बाकी था। मुझे लगता था कि पिता जी चाहते होंगे कि तब तक मैं किसी प्राइवेट स्कूल में पढ़ा लूं लेकिन उन्होंने ऐसा कभी कहा नहीं था। मां को अखबार पढ़ना बहुत अच्छा लगता था लेकिन हमने घर में अखबार नहीं लगवा रखा था। पिता जी कभी कभी स्कूल से पिछले दिन का अखबार उठा लाते थे। उस शाम हम सबको बहुत अच्छा लगता था। हालांकि पिता जी के स्कूल में 'राजस्थान पत्रिका' आती थी और मां को 'भास्कर' ज्यादा पसंद था।

किसी किसी इतवार को मैं सुबह घूम कर लौटते हुए अड्डे से 'भास्कर' भी खरीद लाता था। बाकी दिन का डेढ़ रुपये का और शनिवार, इतवार का ढाई रुपये का आता था। उन दो दिन साथ में चिकने कागज वाले चार रंगीन पन्ने होते थे।

मां कभी कभी बहुत बोलती थी और कभी कभी बहुत चुप रहती थी। स्कूल के टाइम को छोड़ कर मां हमेशा घर में होती थी इसलिए घर में रहो तो मां के होने का ध्यान नहीं रहता था। बाहर जाकर मां की बहुत याद आती थी। मैं सोचता था कि आज घर लौट कर उसे बताऊंगा कि तेरी याद आयी, लेकिन घर आने पर फिर उसके होने का ध्यान चला जाता था। रागिनी कहीं नहीं होती थी इसलिए उसकी याद दिन भर आती थी। मुझे लगता था कि वह भी घर में रहने लगती तो चार छः महीने बाद उसकी याद भी बाहर आती और घर में उसे भूल जाया करता।

पिता जी बोर्ड की परीक्षा की खूब सारी कॉपियां मंगवाते थे। हर उत्तरपुस्तिका को जांचने के दो रुपये मिलते थे। मई और जून में मैं, मां और लता उनके साथ मिल कर पूरी दोपहर कॉपियां जांचते

www.tadbhav.com

थे। किसी किसी कॉपी में सिर्फ एक पत्र मिलता था, जो जांचने वाले अज्ञात गुरु जी के नाम होता था। अक्सर वह गांव की किसी तथाकथित लड़की द्वारा लिखा गया होता था जो घरेलू कामों में फंसी रहने के कारण ठीक से पढ़ाई नहीं कर पायी होती थी और जिसकी सगाई का सारा दारोमदार उसके दसवीं पास कर लेने पर ही होता था। आखिर में आदरणीय गुरु जी के पैर पकड़ कर निवेदन किया गया होता था और कभी कभी दक्षिणास्वरूप पचास या सौ का नोट भी आलपिन से जोड़ कर रखा होता था। मां उन रुपयों को मंदिर में चढ़ा आती थी। मैं और लता ऐसी कॉपियों पर बहुत हंसते थे। पिता जी ऐसी पूरी खाली उत्तरपुस्तिकाओं में किसी पन्ने पर गोला मार कर अंदर सत्रह लिख देते थे।

रागिनी एक दिन लाल किनारी वाली साड़ी में बाजार में दिखी थी। वह कार से उतरी थी। कार में उसका पति बैठा होगा। मैं काले शीशों के कारण उसे नहीं देख पाया। रागिनी ने मुझे देखा और उसकी नजर एक क्षण के लिए भी मुझ पर नहीं ठहरी। ऐसा करने के लिए मानसिक रूप से बहुत मजबूत होने की आवश्यकता थी। मैं ऐसा कभी नहीं हो सकता था। फिर वह सुनार की दुकान में घुस गयी। कार का नम्बर जीरो जीरो जीरो चार था। मुझे बहुत दुख होता था। मुझे दुख का शौक हो गया लगता था। मैं भिण्डी खरीद रहा था जिसका भाव सोलह रुपये किलो था। वह सोना खरीद रही थी जिसका भाव मुझे नहीं मालूम था। उसे भी भिण्डी का भाव नहीं मालूम होगा। मैंने तराजू में से दो तीन खराब भिण्डी छांट कर अलग की और आधा किलो के सात रुपये दिये। सब्जी वाला बहुत मोटा आदमी था और उसकी एक आंख नहीं खुलती थी। वह हंसता भी नहीं था। रागिनी तुरंत ही बाहर निकल आयी। शायद लॉकेट वगैरह बनने को दिया होगा जो बना नहीं होगा। इस बार उसने मेरी ओर नहीं देखा। कार का दरवाजा खुला। ड्राइविंग सीट पर एक पीली टी शर्ट वाला आदमी दिखा। रागिनी उसकी बगल में ही बैठ गयी थी। फिर उसने ऊपर लगा शीशा कुछ ठीक किया और दरवाजा बंद कर लिया।

उस रात मुझे कई सपने दिखे। एक में मैं जादूगर था। मैं लड़की को बीच में से आधा काटने वाला जादू दिखाने ही वाला था कि लड़की मेरे हाथ से माइक छीन कर मेरे जादू की असलियत दर्शकों को बताने लगी। दर्शक एक एक करके उठ कर चले गये और पूरा हॉल खाली हो गया। फिर वह लड़की जोर से हंसी। फिर उस लड़की में मुझे रागिनी का चेहरा दिखा, फिर कुछ देर बाद मां का, फिर कुछ देर बात लता का।

दूसरे सपने में मैं ट्रक ड्राइवर था। मेरी एक आठ नौ साल की बेटी थी। मैं रोज रात को देर से घर आता था। तब तक मेरी बेटी सो जाती थी। सुबह उसके उठने से पहले मैं निकल जाता था। कई बार बहुत दिन में घर आना होता था। बहुत दिन का सपना एक ही रात में एक साथ दिख गया था। मैं दिन भर बहुत गालियां देता था और बहुत गालियां खाता था। मेरा रोने का मन होता था तो हाइवे पर किसी ढाबे वाले को कह कर लड़की का इंतजाम करवा लेता था। लड़की हर दुख की दवा थी। मुझे मेरी बेटी की भी बहुत याद आती थी। उसकी आवाज सुने हफ्तों बीत जाते थे। एक ही सपने में हफ्ते भी दिख गये थे। एक दिन मैं घर लौटा तो मेरी पत्नी ने मुझे एक कागज दिया जो रात को सोने से पहले मेरी बेटी ने उसे मेरे लिए दिया था। टूटी फूटी लिखाई में दो लाइनें लिखी थीं।

नदी किनारे बुलबुल बैठी, दाना चुगदी छल्ली दा।
पापा जल्दी घर आ जाओ, जी नहीं लगदा कल्ली दा।

फिर मैं बहुत रोया और जग गया। सच में रागिनी की बहुत याद आती थी। सोने का भाव दस हजार के आसपास कुछ था।

लता ने कहा – वहां देखो, कितने जाले लगे हैं।

और मां दौड़ कर मेज उठा लायी और उस पर चढ़ कर फूल झाड़ू से जाले उतारने लगी।

www.tadbhav.com

मैंने कहा – मुझे और भूख लगी है।

मां दौड़ कर रसोईं में गयी और आटा छान कर गूंथने लगी।

पिता जी ने कहा – मैं आज खाना नहीं खाऊंगा।

मां ने उनकी रोटियों पर थोड़ा ज्यादा घी चुपड़ दिया। वैसे घी पश्चिमी चिकित्साशास्त्र का दुश्मन था, जो किसी भी रोग में सबसे पहले बंद करवा दिया जाता था।

मैंने देखा कि मेरी तीन मांएं हैं, एक रोशनदान पर टंगी हुई, एक आटा छानती हुई, एक घी चुपड़ती हुई।

मैंने लता को दिखाया– देख लता। तीन तीन मां।

– हां।

उसने भी देखा।

मैं दौड़ कर बरामदे में बैठे पिता जी के पास गया – देखो पिता जी, तीन तीन मांएं।

– हां।

उन्होंने भी देखा।

मैंने लता से पूछा – क्या टाइम हुआ है?

– साढ़े दस।

– फिर तो एक मां स्कूल में भी गयी होगी।

– यानी हमारी चार मां हैं?

– और एक को सुबह मैंने कपड़े धोते हुए भी देखा था।

– मतलब पांच हैं?

– हां।

– यानी घर में हम आठ लोग हैं?

पिता जी ने बीच में कहा – नहीं, चार ही हैं।

– पिता जी आपका पेट दर्द कैसा है?

पिता जी बीच में बोले तो मुझे याद आया।

– खाना खाने के बाद हल्का हल्का होता है। आजकल जी कुछ ठीक नहीं रहता।

पिता जी अपना पेट पकड़ कर सहलाने लगे। लता उनके लिए पानी लाने चली गयी। मैंने कहा कि मेरे भी सीने में बहुत दर्द रहता है। उन्होंने सुना नहीं। लता ने रसोई में से ही सुन लिया था। वह दो गिलास पानी लोकर आयी। स्टेनलेस स्टील के गिलास थे जिन पर लता का नाम खुदा हुआ था।

मैंने उससे पूछा पानी पीने से दर्द ठीक हो जाता है?

पिता जी ने कहा नहीं दवा खाने से भी नहीं होता है।

मैंने कहा आजकल नकली दवाइयां बहुत बनने लगी हैं।

मेरी इस बात पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। हम दोनों ने पानी पी लिया।

तकलीफ के बदले तकलीफ देना प्यार के बदले प्यार देने से ज्यादा जरूरी लगता था। रागिनी एक लड़की का नाम था जिसके दो हाथ, दो पैर, दो आंखें, दो कान, दो वक्ष, एक नाक, एक माथा, एक सिर था। रागिनी पहली लड़की नहीं थी जिससे मुझे प्यार हुआ, और न ही आखिरी थी। वह सब लड़कियों जैसी थी। अब मुझे लगता था कि वह बुरी थी। जिन जिन लड़कियों से मैंने प्यार किया था वे बेहद स्वार्थी लड़कियां थीं। उनमें और लड़कियों से अलग कुछ भी नहीं था इसलिए मुझे सब लड़कियां बुरी लगने लगी थीं। लेकिन ऐसा सबको नहीं लगता था। ऐसा सबको नहीं लगता था इसलिए इसे खुल कर कहना फ्रस्ट्रेशन कहा जाता।

www.tadbhav.com

लेकिन ऐसा था। ऐसा था तो लता भी बुरी लड़की होगी। मेरी अच्छी बहन बुरी लड़की लता गिलास लेकर चली गयी।

लता जाते जाते बोली – आज यस बॉस आयेगी।

हम सबने अनसुना कर दिया। पिता जी अखबार उठा कर पढ़ने लगे। मैं उठ कर अपने जूते पॉलिश करने चल दिया। लता एक पुराना और एक कम पुराना गाना गुनगुनाने लगी। ऐसे जैसे कि गीत की किसी पंक्ति को गलत सुन कर 'आज यस बॉस आयेगी' समझ लिया गया हो।

आजकल तेरे मेरे प्यार के चर्चे हर जबान पर...

और नया गाना चालू सा था। वह उसने कुछ मंद आवाज में गाया।

आज अभी इसी वक्त ही मुझको पता चला है... कि मुझे प्यार प्यार प्यार हो गया है...

हमारे घर में बुश कम्पनी का एक पुराना टीवी था जिसमें चित्र कभी स्थिर नहीं रहते थे। वे ऊपर से नीचे नदी की तरह लगातार बहते रहते थे। टीवी पर आगे लगी चार घुंडियों में से एक पर वी. होल्ड लिखा हुआ था जिसका अर्थ हममें से किसी को नहीं पता था। उसको घुमाने से नदी का प्रवाह धीमा और तेज होता था और एक सीमा के बाद प्रवाह की दिशा भी उलट जाती थी। हम उसको झटके से लगातार दोनों तरफ ऐसे घुमाते थे जिससे पर्दे पर दृश्य लगभग स्थिर दिखता रहे। यह बहुत मेहनत और धैर्य का काम था। इसके लिए एक व्यक्ति को टीवी के बराबर में बैठे रहना पड़ता था। सब टीवी देख रहे होते थे तो मैं और लता बारी बारी से यह जिम्मेदारी संभालते थे। अकेले टीवी देखना बहुत मुश्किल काम लगता था। हम बड़े होते गये तो हमारा टीवी देखना कम होता गया। हमें टीवी न देखने का शौक हो गया था। 'यस बॉस' लता की फेवरेट फिल्म थी जो उसने कभी नहीं देखी।

मैं और पिता जी शाम को घूमने गये। ऐसा कई सालों बाद हुआ था कि हम बिना काम के एक साथ घर से बाहर निकले हों। मैं लाल दरवाजा, रामनाथ पुल, श्रीकृष्ण मंदिर, गोल बाजार, शहद की छतरी और शहर की और भी बहुत सारी जगहों से बचता था। जिन जिन जगहों पर रागिनी की यादें चिपकी हुई थीं, उन जगहों के पास जाते ही आत्महत्या के खयाल आते थे। मूंगफली खाना भी मर जाने जैसा लगने लगा था। मुझे लगने लगा था कि मैंने एक बार और प्यार किया तो इस छोटे से शहर में मेरे जाने को कोई जगह नहीं बचेगी। मुझे लगता था कि इसीलिए ज्यादातर लोग नौकरियों के बहाने से अपने बचपन और जवानी का शहर छोड़ देते होंगे। नये शहरों में नये प्रेम होते होंगे। फिर कुछ साल बाद पैसे देकर तबादला करवाना पड़ता होगा। जिनके पास तबादले के पैसे नहीं होते होंगे, उन्हें खुदकुशी के खयाल के साथ जीना पड़ता होगा। मैंने अपने पिता की ओर देखा। वे बीस साल से इसी शहर में थे। उनके चेहरे पर झुर्रियां पड़ रही थीं। वे और दुबले होते जा रहे थे।

– पिता जी आपने कभी कछुआ देखा है?

– नहीं।

– आप पढ़ाते तो थे कि बहुत धीरे धीरे चलता है कछुआ।

– रोजगार समाचार देखता रहता है ना?

– हां पिता जी। हरियाणा में वेकेन्सी निकली है।

– वहां तो पैसा चलता है बस।

– पैसा कैसे चलता होगा? कछुए की तरह धीरे धीरे तो नहीं ना?

उन्होंने नहीं सुना।

आधी बातें बिना सुने भी जीवन उसी तरह जिया जा सकता था। वैसे भी हमारे शहर में सुनने को ज्यादा बड़ी बातें नहीं होती थीं। दो पड़ोसी एक कीकर के पेड़ को लेकर सालों तक झगड़ते रहते थे और फिर अगली पीढ़ी जवान होकर लड़ने लगती थी। लड़के अनजान लड़कियों के लिए झगड़ बैठते थे और हॉकी स्टिक और लाठियां लेकर आ जाते थे। अनजान 'बुरी' लड़कियों को अक्सर खबर

www.tadbhav.com

भी नहीं होती थी और खबर हो जाती थी तो यह गर्व का विषय होता था। लड़के बसों की यात्रा मुफ्त करवाने के लिए कभी कभार स्कूल कॉलेजों में दस बीस दिन की हड़ताल भी कर देते थे। किसी दिन सरकारी स्कूल का कोई शिक्षक अपने ही छात्रों के हाथों पिट भी जाता था। बसें और सिनेमाहॉल जी भर के तोड़े जाते थे। कोल्ड ड्रिंक की बोतलें उठा कर भाग जाना होता था। पुलिस आंसू गैस छोड़ती थी। आंसू गैस नाइट्रस आक्साइड नहीं थी। नाइट्रस आक्साइड हंसाने वाली गैस थी लेकिन कुछ भी करवाने वाली गैस का नाम पूछा जाय तो नाइट्रस आक्साइड का नाम ही दिमाग में सबसे पहले आता था। नाइट्रस आक्साइड की दुनिया में भारी कमी हो गयी लगती थी। पुलिस हंसाने वाली गैस छोड़ती तो शायद दुनिया ज्यादा बेहतर बन सकती थी।

घर के बाहर भीड़ लगी थी। तीन लड़के लता का पीछा करते हुए घर तक आये थे। लता ने तेजी से अंदर घुस कर मां को बाहर बुला लिया था और बताया था कि कई दिन से ये लड़के ब्यूटीपार्लर से घर तक उसके पीछे आते हैं। मां उन लड़कों को रोक कर गालियां देने लगी थी। वे लड़के भी हंस हंस कर जवाब दे रहे थे। आस पड़ोस के और राह चलते लोग आ जुटे थे। अच्छा खासा तमाशा बन गया था।

पिता जी कुछ देर से बाहर आये। तब तक मां अकेली बोलती रही। उसने लता को अंदर भेज दिया। मैं घर में नहीं था। मैं यादव के घर में पड़ा रागिनी को याद कर रहा था। कोई पड़ोसी कुछ बोल नहीं रहा था। मां चिल्लाती चिल्लाती रोने को हो गयी थी। लड़के खड़े बेशर्मी से हंसते रहे थे।

पिता जी चश्मा लगाते हुए बाहर निकले। उन्होंने सफेद कुर्ता पायजामा पहन रखा था। उनके चेहरे पर कुछ था कि उनका अध्यापक होना पहली नजर में ही पता चल जाता था। ऐसा लगता था कि उन्हें मारो तो वे सिर्फ धमकायेंगे, मार नहीं सकेंगे। उन तीन लड़कों में जो लड़का ‘मुख्य’ लड़का था, वह गली की एक बूढ़ी औरत को बुला लाया। वह उसके उस दोस्त की मां थी, जिससे मिलने वे तीनों रोज शाम को आते थे। उस बूढ़ी औरत ने चिल्ला चिल्ला कर इस बात को सत्यापित किया। पिता जी चुप रहे। हो सकता है कि पिता जी कुछ बोले भी हों मगर वह किसी ने सुना नहीं। भीड़ और बढ़ गयी थी जैसे शाहरुख खान की कोई फिल्म चल रही हो। फिल्म होती तो उस दृश्य में मेरे पिता जी को खलनायक की तरह प्रस्तुत किया जाता। सब ‘मुख्य’ लड़के की मुस्कुराहट पर तालियां बजाते। मैं और लता भी हॉल में बैठ कर ऐसी कोई फिल्म देख रहे होते तो पिता जी को खलनायक ही समझते। वैसे वे पूरी फिल्म के खलनायक या नायक कभी नहीं बन सकते थे क्योंकि वे अध्यापक थे। उनका एक ही सीन होता।

पिता जी ने थोड़ी तेज आवाज में उन्हें चले जाने को कहा तो भीड़ ने सुना। भीड़ अब पहले से धीरे फुसफुसाने लगी। यह उन लड़कों को अपमानजनक लगा। मुख्य लड़के ने हंसना बंद कर दिया। उसके पीछे पीछे बाकी दोनों लड़के भी गम्भीर हो गये। सब वहीं खड़े रहे। फिर अचानक मुख्य लड़का तैश में आ गया और उसने पिता जी को गाली दी।

वह एक लम्बी गली थी, जिसमें हमारा घर था। उस गली के दोनों कोनों पर खड़े आदमियों ने वह गाली सुनी। हमारे घर के पचास मीटर के दायरे में ही साठ सत्तर लोग होंगे। घरों में बैठे लोगों और छत से देख रहे लोगों के साथ गाय, भैंसों, कुत्तों, चिड़ियों, कबूतरों, मेढकों और चूहों के कानों को जोड़ कर ठीक ठीक हिसाब लगाया जाय तो करीब दो हजार कानों ने वह गाली सुनी। मेरी जानकारी में पिता जी को ऊंचा तो नहीं सुनता था, लेकिन और कौन सी वजह हो सकती है कि पिता जी ने पूछा – क्या?

यह ‘क्या’ उन लड़कों को किसी चुटकुले सा लगा और वे हंस दिये। भीड़ चुप, जैसे भीड़ को अजगर सूंघते हों। दो क्षण के लिए भीड़ का सिर झुका और फिर उठ गया। आंखें तीर की तरह

www.tadbhav.com

हमारी देहरी पर। मां, जो कभी कभी ऊंचा सुनती थी, उसने अपनी बाटा की चप्पल उतारी और लड़के के मुंह पर दे मारी। मां का निशाना इतना अच्छा नहीं था लेकिन लड़का बचने के प्रयास में नीचे झुक गया तो चप्पल सीधे उसकी नाक पर लगी। भीड़ हंसी, भीड़ फुसफुसायी, अजगर सूंघता हुआ लड़कों के पास आ खड़ा हुआ। लड़के स्तब्ध से कुछ क्षण खड़े रहे और फिर चले गये। पिता जी भीड़ के पार से गली के दूसरे मोड़ को देखते रहे। मां ने नाली के पास पड़ी अपनी चप्पल उठायी और एक चप्पल पैर में पहने, एक हाथ में लिए भीतर चली गयी। भीड़ भी छंट गयी।

उस रात मां ने राजमा की सब्जी बनायी। मैं उसी के साथ रोटियां खा रहा था, जब मां ने मुझे शाम की पूरी घटना सुनायी। मुझे लगा कि उस घटना को सुन कर मुझे जोरों से गुस्सा आना चाहिए था, जो नहीं आया। मैंने और दिनों की अपेक्षा आधी रोटी ज्यादा ही खायी होगी। मां बीच बीच में रोने लगती थी। मुझे दुख होता था। लता अंदर बैठी किसी पत्रिका का बुनाई विशेषांक पढ़ रही थी। उस रात पिता जी मुझे नहीं दिखे, हालांकि वे घर में थे।

शाम को मैं यादव के घर में पड़ा रहा था। मैं रागिनी के गीत गाता रहा था और वह उकता कर अपना ब्लू फिल्मों का कलेक्शन उठा लाया था। उसके पिता का ट्रांसपोर्ट का बिजनेस था। उनके घर वी.सी.आर. था।

– इसके कितने सही हैं ना यार। बस ऐसे मिल जायें एक बार...

– फिर क्या करेगा?

– फिर तो वही बतायेगी क्या किया?

उसने ऐसा चेहरा बनाया कि उसके दिमाग में बना चित्र मुझे साफ साफ दिख गया। मुझे हंसी आ गयी। मैं उठ कर बैठ गया और यादव की तरह टकटकी बांध कर टीवी देखने लगा।

वह खुशी नहीं थी, जो हमें उन फिल्मों को देख कर मिलती थी। या तो वह उम्र ऐसी थी या वह समय, या वह शहर, कि हमारा रोने का मन करता था तो भी हम ब्लू फिल्में देखते थे, गुस्सा आता था तो भी, प्यार के बिना जीना असम्भव लगने लगता, तो भी...

हमारी आंखों की कोरों में इतनी बेचैनी भरी पड़ी थी कि उन दिनों वे फिल्में न होतीं तो हम आत्महत्या कर लेते। उन देशी विदेशी नीली फिल्मों ने हमें जिलाये रखा। वे फिल्में हमारी भगवान थीं।

लता कम्प्यूटर सीखने लगी थी। उसकी नयी चीजों को सीखने की ललक देख कर मुझे अचरज होता था। मुझ पर तो पुरानी बातों और यादों का बोझ ही इतना बढ़ता जाता था कि मैं ठीक से जीता रहूं, यही मुझे काफी लगने लगा था। वह अब शाम को एक घंटा और देर से आती थी। तब तक अंधेरा होने लगता था। मां पिता जी मुझे उसे लेने जाने के लिए कहते थे, लेकिन मेरा मन नहीं करता था। मैं चुप अंधेरे में पड़ा रहता। मां पिता जी बूढ़े होते जा रहे थे। मैं उनके लिए भी चिन्तित होता था, लेकिन कुछ नहीं कर पाता था। नयी सरकार आने में अभी वक्त था।

लता पड़ोस के चार पांच बच्चों को ट्यूशन भी पढ़ाने लगी थी। कभी कभी मुझे लगता था कि वह मुझे अपमानित करने के लिए ऐसा कर रही है। उस पर वह दिनभर झूठा लाड़ भी दिखाती थी तो मुझे गुस्सा आता था। वह रात को सोने से पहले मेरे लिए दूध लेकर आती तो मैं उसे डांट देता था। वह रुआंसी हो जाती और दूध रख कर चुपचाप चली जाती। हमारे घर में दो कमरे थे। एक में मैं सोता था और एक में मां, पिता जी और लता। मुझे अक्सर बहुत देर में नींद आती थी।

एक दिन रागिनी का फोन आया। फोन मां ने उठाया। अमूमन मेरे लिए कोई फोन नहीं आता था, इसलिए मैं फोन के बिल्कुल पास भी बैठा होता तो भी फोन नहीं उठाता था। हमारी कई माएं थीं, इसलिए एक मां बाहर आंगन धो रही होती थी तो दूसरी दौड़ कर फोन उठाने आती थी।

www.tadbhav.com

उस दिन भी ऐसा ही हुआ। मां बहुत अच्छे स्वभाव की थी लेकिन शक्की थी। कोई लड़की मुझे फोन करेगी, यह सोच कर ही वह कांप जाती होगी। रागिनी ने मुझे बुलाने के लिए कहा तो मां ने ढेर सारे सवालों की झड़ी लगा दी।

...कौन हो, कहां से हो, किसकी बेटी हो, क्या काम है...

उसने नाम बताया और अगले सवाल पर फोन काट दिया। वैसे उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था। फोन काटना ही था तो बिना नाम बताये काटती। मां ने मुझसे पूछा कि रागिनी कौन है? मैंने कहा कि मैं किसी रागिनी को नहीं जानता। ऐसा कहते हुए मैंने विशेष ध्यान रखा कि मेरी नजरें मां की नजरों से मिली रहें। उसके बाद दिनभर मां चुप चुप खोयी खोयी सी रही। मैं जानता हूं कि मां के खयालों में एक चित्र बना होगा जिसमें मैं एक सुंदर लड़की के होठ चूम रहा हूंगा। बैकग्राउंड में हरियाली होगी या दस बाई दस का छोटा सा कमरा। बहुत सम्भावना है कि मां ने बैकग्राउंड पर या मुझ पर ध्यान ही नहीं दिया होगा। मां ने लड़की की आंखें, नाक, कान जांचे होंगे। कल्पना के चित्र में अच्छे नैन नक्श वाली लड़की ही आयी होगी, इसलिए मां को हल्की सी संतुष्टि मिली होगी। मां ने सोचा होगा कि चित्र में कहीं कोने में लड़की की जाति भी लिखी रहती तो अच्छा रहता। फिर शाम को मैंने यादव के घर से रागिनी को फोन किया। उन दिनों दिनभर मेरी आंखें दुखती थीं। मेरी दृष्टि धुंधली होती जा रही थी। मुझे डर लगने लगा था कि कहीं मैं जल्दी ही अंधा न हो जाऊं। यह डर दुनिया के सबसे बड़े डर की तरह लगता था। रागिनी फोन पर देर तक रोती रही। उसने मुझे बताया कि वह विजय से प्यार नहीं करती और उसके साथ बहुत दुखी है। उसने कहा कि उसे मेरी बहुत याद आती है। उसका रोना और खासकर रोने का कारण मुझे बहुत अच्छा लग रहा था। मैं खुशी से चिल्लाना चाहता था। मैंने उसे बताया कि मैं उसे कितना प्यार करता हूं। यह मैंने इतना बताया कि सुनते सुनते वह चुप हो गयी और फिर खिलखिला कर हंसने भी लगी। उसने कहा कि मेरी मां की बातें सुन कर लगता है कि वह मुझसे बहुत प्यार करती है। मैंने कहा कि हां। उसने कहा कि वह मुझसे मिलना चाहती है। मैंने उसे याद दिलाया कि हमने उस दिन सुनार की दुकान के बाहर एक दूसरे को देखा था। उसने कहा कि उस दिन विजय उसके साथ था। मैंने कहा कि हां। उसने कहा कि वह शकरकंद खा रही है। मैंने उससे कहा कि मुझे भी खिलाये। उसने पूछा – फोन में से कैसे खिलाऊं?

यह हम पहले भी बहुत बार एक दूसरे से पूछते थे और हंसते थे। फिर मैंने उसे अपनी आंखें बतायीं। उसने मुझे जल्द से जल्द डॉक्टर को दिखाने की हिदायत दी।

वे बरसात के दिन थे, जब मैंने चलना सीखा था। जब मैंने संसार को ठीक से देखना सीखा था, वे भी बरसात के ही दिन थे। बरसात की ही एक शाम में मैंने रागिनी को पहली बार देखा था। उस फोन के बाद हम बारिश के ही एक दिन मिले। उसने बताया कि वह उसकी एक सहेली शिल्पा का घर था। शिल्पा अकेली रहती थी। सामान से भरे उसके घर को देख कर ऐसा लगता नहीं था, लेकिन रागिनी ने मुझे यही बताया। उस दिन शिल्पा अपने घर की चाबी रागिनी को देकर चली गयी थी। हर शहर में इस तरह के आपसी सहयोग की बहुत व्यवस्थाएं होती थीं।

मैं जब पहुंचा तो वह मेरा ही इंतजार कर रही थी। उसने हल्की नीली जीन्स और किसी गहरे रंग का टॉप पहन रखा था। उसके बाल खुले थे। दरवाजा खोलते ही वह मुस्कुरायी। ड्रॉइंग रूम में टीवी चल रहा था, जिसके चित्र लहरों की तरह नहीं बहते थे। ड्रॉइंग रूम की छत पीली और दीवारें हरी थीं। एक फानूस भी लटक रहा था। मुझे लगा कि मैंने उसे गले लगा लिया है, लेकिन जब उसने सोफे पर बैठने का कहा तो मेरी तंद्रा टूटी। मैं बैठ गया। वह खुश थी। मैं भी। वह मेरे पास आकर बैठ गयी। उसकी जीन्स मेरी जीन्स को छू रही थी।

हमारी जान पहचान के शुरू के दिनों में हम एक साइबर कैफे में मिला करते थे। वह पहले जाती थी। मैं करीब दस मिनट बाद घुसता था। हम एक ही केबिन में बैठते थे। मैं जब भी जाता,

www.tadbhav.com

साइबर कैफे वाला मुझे देख कर मुस्कराता था। मुझे अच्छा लगता था। गर्वीला अच्छा। मुझे कम्प्यूटर के बारे में उतना ही मालूम था, जितना अंटार्कटिका के बारे में था। अंटार्कटिका में बर्फ थी, जो वायुमंडल का तापमान बढ़ते जाने से साल दर साल पिघल रही थी। ओजोन परत में एक छेद था जो इसके लिए उत्तरदायी था। फ्रिज से कोई हानिकारक गैस निकलती थी। समुद्रों में पानी का स्तर बढ़ता ही जा रहा था। अंटार्कटिका में लोग नहीं रहते थे। बस इतना ही।

वह केबिन इतना छोटा होता था कि हम न भी चाहते तो भी सट कर बैठना पड़ता और हम चाहते थे, इसलिए और भी सट कर बैठते थे। उसके घर में भी कम्प्यूटर था, इसलिए वह काफी कुछ जानती थी। वह एक दो वेबसाइट भी खोलती थी वह अपना ईमेल मुझे दिखाती। उसे हमेशा कई लड़कों के प्यार के प्रस्ताव वाले मेल आते थे। वह मुझे पढ़वाती थी। मैं उसकी हथेली और कस कर पकड़ लेता था। हमारी हथेलियां पसीज जाती थीं। हम मेल पढ़ते पढ़ते हंसते थे। फिर वह मेरे घुटने पर अपना हाथ रखती थी, अक्सर घुटने से कुछ ऊपर। उसका अर्थ जाने क्या होता था। लेकिन जो भी होता हो, मुझे उत्तेजना होती थी। वह बाल खोल लेती थी। वह बताती थी कि उसने बाल आज ही धोये हैं। मुझे लगता था कि वह रोज बाल धोती होगी। मैं यह उससे पूछता था तो वह मेरी नादानी पर हंसती थी। वह मुझे अपने बाल छूकर उनका गीलापन देखने के लिए कहती थी। मैं उसके बालों में उंगलियां फिराने लगता था। वह जैसे सर्दी में थरथराती थी और उसकी आंखें बंद होने लगती थीं। उसका चेहरा मेरे चेहरे के करीब आता जाता था। मैं दोनों हाथों से उसका चेहरा पकड़ कर उसे बेतहाशा चूमने लगता था। उसके होंठ, उसकी नाक, माथा, बंद आंखें, उसके बड़े बड़े कान, गर्दन की नीली नसें, उसकी ब्यूटी बोन और ब्यूटी बोन का गड्ढा। वह मेरे हाथ पकड़ कर अपनी छातियों तक ले जाती थी। मैं पागल हो जाता था। वह बार बार बुदबुदाती थी कि मैं बहुत बुरा हूं। मैं उसे इतना देखना चाहता था कि मेरी आंखें कभी बंद नहीं होती थीं।

वह उन दिनों बहुत सारे वादे करती थी, मसलन मेरे बिना वह मर जायगी और मर भी गयी तो मुझे भूल नहीं पायेगी। उसके हर वादे पर मुझे लगने लगता था कि अब वह जल्दी ही मुझे छोड़ने वाली है। मैं उसके होठों पर हाथ रख देता था। हम बस में साथ साथ बैठ कर पास के शहर तक जाया करते थे और चाय पीकर लौट आते थे। उसे मूंगफलियां बहुत पसंद थीं और मुझ वह।

उस दिन, जब उसकी जीन्स मेरी जीन्स को छू रही थी, वह मेरे कंधे पर सिर रख कर सुबकने लगी। उसके बाल मेरे गालों को छू रहे थे। मैंने उससे पूछा कि यह कौन सा हेयर स्टाइल है? उसने भर्राये गले से कहा – लेयर स्टेप। उसने कहा कि उसे अपने पापा की बहुत याद आती है और मेरी भी। उसने बताया कि उसके पापा तीन महीने पहले एक कार दुर्घटना में चल बसे थे। मुझे दुख हुआ। मेरा मन हुआ कि मैं कुछ भी करके उसका दुख मिटा दूं। मैंने उससे कहा कि मैं अभी जिन्दा हूं, इसलिए कम से कम मुझे याद करके तो उसे रोना नहीं चाहिए। मैंने कहा कि उसके पापा यदि उसे कहीं से देख रहे होंगे तो उसे रोते हुए तो नहीं देखना चाहेंगे ना।

यह दिलासा देने का बहुत पुराना तरीका था। इस समझाइश ने काम नहीं किया। वह बदस्तूर रोती रही। मैंने कुछ मनगढ़ंत बातें यह कह कर कहीं कि ऐसा गीता में लिखा है। वे बातें सुन कर वह कुछ शांत होने लगी। मैंने उससे कहा कि मैं उससे बहुत प्यार करता हूं और उसे हमेशा खुश देखना चाहता हूं और उसके लिए कुछ भी कर सकता हूं। मुझे अपनी बातें कुछ बाजारू सी भी लगीं लेकिन मैंने उसका चेहरा अपने हाथों में लेकर, उसकी आंखों में आंखें डाल कर ऐसा कहा। वह चुप हो गयी और उसने अपने आंसू पोंछ लिये।

लौटने से पहले हमने मूंगफलियां खायीं, चाय पी और एक दूसरे को चूमा। उसने कहा कि वह मुझमें समा जाना चाहती है, लेकिन उसके लिए पहले विजय को अपनी जिन्दगी से दूर करना चाहती है। मैंने कहा कि मैं इंतजार करूंगा। उसने कहा कि इंतजार के अलावा कुछ और भी है, जो

www.tadbhav.com

मैं उसके लिए कर सकता हूं। मैंने पूछा — क्या?

उसने कहा कि क्या मैं उसे पच्चीस हजार रुपये दे सकता हूं? उसे तलाक की कार्रवाई के लिए इन रुपयों की जरूरत थी। ऐसा उसने मेरा चेहरा अपने हाथों में लेकर, मेरी आंखों में आंखें डाल कर पूछा।

मैंने कहा कि हां।

जबकि मैं बेरोजगार था और मेरे पिता की तनख्वाह सात हजार रुपये महीना थी, मां की डेढ़ हजार और लता ट्यूशन से बारह सौ रुपये कमाने लगी थी, मैंने उसके सिर पर हाथ रख कर यह वचन दिया।

जिन्दगी ज्यादा खूबसूरत नहीं हो सकती थी। लता अस्वस्थ रहने लगी थी। वह नींद से अचानक चौंक कर जग जाती और चिल्लाने लगती। कभी मेरा नाम लेकर, कभी मां का, कभी बिल्ली, कभी दीवार, कभी छाया। शुरू में हमने सोचा कि कोई डरावना सपना देख लेती होगी। लेकिन फिर उसका पसीने में भीग कर चिल्लाते हुए जगना हर रात होने लगा तो हमें चिन्ता हुई। अब वह जागने के बाद भी डरी रहती और हममें से किसी को नहीं पहचानती। हम पास जाने की कोशिश करते तो डर कर और चीखती। मां कमरे का दरवाजा कस कर बंद कर देती थी कि कहीं पड़ोसी न सुन लें। अगर मां उसके साथ किसी रात अकेली होती और वह चिल्लाती तो मां उसे थामने से पहले दरवाजे की ओर भागती। कई बार हड़बड़ी में दरवाजा जल्दी से बंद नहीं होता था और पड़ोसी कुछ न कुछ सुन ही लेते थे। वैसे दरवाजे इतने भी बढ़िया नहीं थे कि आवाज को रोक पाते। कभी कभी तो वे हवा को भी नहीं रोक पाते थे। बंद दरवाजे के बाहर खड़े होकर फूंक मारो तो उसका थोड़ा हिस्सा दूसरी तरफ भी महसूस होता था। यह वहम भी हो सकता था।

दस पंद्रह मिनट बाद लता सामान्य हो जाती थी और भोलेपन से पूछती थी कि तुम सब आधी रात में बैठ कर मुझे क्यों घूर रहे हो? कई दिन तक तो हम उसे कुछ नहीं बताते थे। मैं अपने कमरे में जाकर पड़ जाता। मां उसे अपने पास खींच कर लाड़ से थपथपा कर सुलाती थी। हर रात हम अपने अपने बिस्तर पर पड़े नींद की नहीं, उसके जागने की प्रतीक्षा करते रहते थे। मां पानी का एक गिलास और रामायण सिरहाने के पास मेज पर रख कर सोती थी। उसके सोने के बाद एक चाकू उसके तकिये के नीचे सरका देती थी, लेकिन सब बेअसर रहता था। हम हर दिन और चुप, और चिन्तित और निराश होते जाते थे।

एक रात उसके जागने के इंतजार में हम तीनों को ही नींद आ गयी। पिता जी की आंख अचानक खुली तो उन्होंने लता के पलंग की ओर देखा वह वहां नहीं थी। कमरे का दरवाजा खुला हुआ था। वे हड़बड़ा कर उठे और मां को उठाया। मां ने मुझे आवाज लगायी। तब तक पिता जी आंगन में पहुंच चुके थे। मैं और मां दौड़ कर उनके पीछे पहुंचे तो देखा कि वह मेन गेट वाली दीवार पर चढ़ कर बिल्कुल सीधी खड़ी है। गली की ट्यूबलाइट की रोशनी उसके चेहरे पर पड़ रही थी। वह एकटक हमारी ओर देख रही थी। हम भीतर तक कांप गये। वह शुद्ध डर था, जो एक बार महसूस हो जाने के बाद जीवन भर सुख दुख के हर क्षण में याद रहता है। लता की फिक्र भी उस डर के कई क्षण बाद हमारे जेहन में आयी।

वह दीवार करीब बारह फुट ऊंची होगी। वह उस तरफ गिरती तो पक्के चबूतरे पर गिरती और इस तरफ गिरती तो पक्की ईंटों के फर्श पर। पिता जी दौड़ कर लोहे के दरवाजे पर से चढ़ने की कोशिश करने लगे। मां दीवार के सहारे उसके बिल्कुल नीचे जाकर बांहें फैला कर खड़ी हो गयी और मुझे कुछ भी नहीं सूझा। मैं बुत बना उसे देखता रहा। वह उस लता की तरह नहीं थी, जो मुझे हर साल राखी बांधती थी और पैसे मांगती थी। उसकी दृष्टि का आत्मविश्वास मेरे सोने वाले कमरे में

www.tadbhav.com

टंगी तस्वीर में कलेक्टर के हाथों ईनाम लेती लता से कई गुना अधिक था। वह बहुत भयंकर थी और बेबस भी। मैं आकर अपने बिस्तर पर लेट गया। मुझे पहली बार इतना हीन होने का अहसास हुआ। मैं जैसे कुछ भी नहीं था। मेरी अच्छी बहन लता किसी भी क्षण मर सकती थी। मुझे उसे दीवार से उतार कर अंदर लाने में मां पिता जी की मदद करनी चाहिए थी, लेकिन मैं वह भी नहीं कर पाया। मैं निष्क्रियता की हद तक उदास था। यदि उस रात मेरी मौत का फरमान मुझे सुनाया जाता तो मैं उससे शत प्रतिशत सहमत होता।

जब मां और पिता जी उसे अंदर लेकर आये तो मुझे रागिनी की बहुत याद आ रही थी। मैं उसी समय उससे बात करना चाहता था। फोन मेरे कमरे में होता तो शायद कर भी लेता। लेकिन उसने अपना नम्बर मुझे नहीं दिया था। मैं पहले शिल्पा के घर तीन बार घंटी बजाता और यदि वह जग रही होती और इशारा समझ जाती तो रागिनी को फोन करके मुझसे बात करने के लिए कहती। मगर इतनी रात को यह सब होना बहुत मुश्किल था और वह भी तब, जब फोन दूसरे कमरे में रखा हो।

मां रोती जाती थी, लता बेहोश थी, पिता जी उसका माथा मल रहे थे और मैं एक लड़की को याद कर रहा था,जो अपने पति के बिस्तर पर आराम से सो रही होगी। मैं यह भी सोच रहा था कि किसका हाथ कहां होगा और किसके पैर कहां? लेकिन मैं बुरा नहीं था, मजबूर था। बहुत कमजोर भी।

आखिर मैं उठ कर दूसरे कमरे में गया। बल्ब की पीली रोशनी में पिता जी और भी बूढ़े नजर आ रहे थे। लता के माथे पर तेजी से चलती उनकी उंगलियां कहीं ठहर कर रो लेना चाहती थीं। मेरे मन में आया कि जब तक नयी सरकार नहीं आती, मुझे किसी प्राइवेट स्कूल में पढ़ा लेना चाहिए। मैंने पिता जी से लेट जाने के लिए कहा। उन्होंने रुक कर मेरी ओर देखा और उठ कर अपने बिस्तर पर जाकर लेट गये। मैं लता के सिरहाने बैठ कर उसका सिर दबाता रहा। मां रोती रही।

जब मैं चौथी कक्षा में पढ़ता था, मुझे पूजा से प्यार हुआ था। वह मेरे साथ वाली बेंच पर बैठती थी, लता के साथ। वह प्यार भी बिना कुछ कहे सुने जल्दी ही बुझ सा गया था, लेकिन तब से ही मुझे पूजा की याद लगातार आती थी। मैंने चौथी की कॉपियां किताबें अब तक संभाल कर रखी थीं। एक दिन जब बहुत याद आयी तो संदूक की तली से उन्हें ही निकाल कर पढ़ने लगा। उन पर चढ़ी हुई अखबारों की जिल्द पढ़ता रहा। उन साधारण सी खबरों में मेरे बचपन की खुशबू थी। मैंने सोचा कि तेरह साल पहले भी रोज मैं इन्हीं जिल्दों को पढ़ता होऊंगा।

एक तरफ सार्वजनिक निर्माण विभाग, बीकानेर के अधिशाषी अभियंता ने निविदाएं आमंत्रित की थीं। उसके ऊपर लिखा था – पॉलीथिन का करो बहिष्कार, यही है प्रदूषण का उपचार। फेमस फार्मेसी का विज्ञापन था, जिसमें कमजोर मर्दों से शर्म संकोच छोड़ने के लिए कहा गया था। कच्ची बस्तियों की नियमन दरों का समाचार था। रेलवे की किसी भर्ती का परिणाम था, जिसमें सामान्य, आ. बीसी, एससी और एसटी श्रेणियां थीं। अखबार ग्यारह मई का था। उसके कुछ दिन बाद स्कूल बंद हो गया था। जब दोबारा स्कूल खुले तो वह नहीं आयी थी। प्रार्थना गाते हुए मेरा गला भर्रा जाता था।

ग्यारह मई को उसका जन्मदिन भी था। उसने क्लास में टॉफियां बांटी थीं। जब वह मुझे टॉफी देने लगी तो मैंने उसकी कलाई पकड़ ली थी। वह मुस्कुरायी थी।

डॉक्टर ने लता के लिए कुछ दवाइयां दी थीं। मां किसी बाबा से मंत्र बुझी राख लायी थी जो उसे चटा दी गयी थी। मां और लता सुबह शाम नियमित रूप से पूजा भी करने लगी थीं। हर तीसरे दिन डॉक्टर अकेले में आधा घंटा उसे कुछ समझाया करता था। मैं लता से पूछता कि डॉक्टर उसे क्या समझाता है तो वह कहती कि ज्यादा समय तो वही बोलती है। वह उससे उसके सपने सुना करता था – सोने वाले भी और जागने वाले भी। मेरे सपने कोई नहीं सुनता था। मुझे लगता था कि

www.tadbhav.com

उसे सपनों की ही कोई बीमारी है और उस इलाज से वह ठीक भी होने लगी थी। मां पिता जी ने आस पड़ोस में किसी को कुछ नहीं बताया था और अब उन्हें उसकी शादी की चिन्ता भी सताने लगी थी। मैं चाह कर भी उनकी चिन्ताओं का साझेदार नहीं बन पाता था।

शिल्पा अकेली रहती थी लेकिन मैं उसे फोन नहीं करता था, रुक रुक कर तीन बार घंटी ही बजाता था। ऐसा रागिनी ने कह रखा था। वे घंटियां अक्सर खाली ही लौटती थीं। रागिनी का जब मन होता, वह तभी फोन करती। उसकी आवाज मुझे पागल कर देती थी। मेरा अपने आप पर से नियंत्रण खत्म होने लगता था। प्यार मुझे असहाय बनाता था। मैं उससे कुछ नहीं पूछता था, फोन न करने पर झगड़ता भी नहीं था। उसे फिर से खो देने के डर से मैं सिर्फ उसे हंसाता था। सब लड़कियों की तरह उसे भी हंसना बहुत पसंद था और हंसाने वाले लड़के। मैं उसे अपने दोस्तों के चटपटे किस्से सुनाता, उसकी बेतुकी बेदिमागी बातों पर ठहाके मार कर हंसता। उसे लगता था कि मैं बहुत खुश हूं। मुझे लगता था कि उसने मेरी उदासी देख ली तो वह मुझसे दूर भागेगी। मैं अपनी बेकारी पर भी हंसता था, अपनी बहन की बीमारी पर भी और रागिनी की शादी पर भी। वह भी बेशर्मी से हंसती थी और अपनी शादी की रात की बातें फुसफुसा कर सुनाती थी। यह क्रूरता अक्षम्य थी।

कभी कभी आंखें इतनी दुखती थीं कि मैं रात रात भर अपने बिस्तर पर पड़ा रोता रहता था। मैं कहीं भाग जाना चाहता था। मुझे हरे रंग के सपने आते थे या जलते हुए लाल रंग के। बाढ़ में बहते हुए शहर, जलते हुए घर, राख होते पेड़, काला आसमान।

एक दिन मैंने उससे कहा – मैं खत्म होता जा रहा हूं रागिनी।

– खत्म मतलब?

क्या यह किसी विदेशी भाषा का शब्द था या खत्म होना उसकी संस्कृति में ही नहीं था?

– खत्म मतलब खत्म...

– तुम्हें पता है, इस रंग का नाम क्या है?

– मुझे कुछ नहीं पता। मेरे भीतर आग सी लगी रहती है।

– मेजेन्टा...

– हां?

– इस कलर का नाम।

मैं चुप रहा। वह तर्जनी से होती हुई अनामिका तक पहुंची। बीच में एक बार सिर उठा कर उसने मुझे देखा। मेरी दाढ़ी बढ़ी हुई थी। मुझे 'जिस्म' याद आयी और जॉन इब्राहम।

मैंने पूछा – तुमने जिस्म देखी है?

– ना...

– तुमने ब्लू फिल्म देखी है कभी?

वह रुक गयी, मुस्कुरायी और चुप रही।

मैंने फिर पूछा – देखी है?

– नहीं।

वह मुस्कुराती रही। मुझे चिढ़ होती थी कि कोई अचानक इतना दुखी और तीसरे ही दिन इतना खुश कैसे दिख सकता है।

– चलो मेरे साथ। हम शादी करेंगे।

उसे छटांक भर भी फर्क नहीं पड़ा। उसके होठ खूबसूरती से फैले रहे। उस कमरे में आमिर खान का एक बड़ा सा पोस्टर चिपका था, जिसकी निगाह हर समय रागिनी की ओर ही रहती थी। मैं खड़ा हुआ और नाखूनों से वह पोस्टर खुरचने लगा। वह अब भी कुछ नहीं बोली। दीवार के पास रखी प्लास्टिक की कुर्सी मैंने हवा में फेंक कर मारी। वह सामने की दीवार पर अपने अपमान के निशान

www.tadbhav.com

छोड़ते हुए नीचे जा गिरी। मेरी सांसें दौड़ रही थीं। मैं खड़ा उसे देखता रहा। वह लेट गयी। मुझे पता था कि वह लेट जायेगी।

तहलका डॉट कॉम उन दिनों सुर्खियों में था। उन्होंने देश को शर्ट के बटन में लग सकने वाले वीडियो कैमरों से परिचित करवाया था। मेरी सफेद शर्ट के सबसे ऊपर वाले बटन पर जो कैमरा लगा था, यादव ने मुझे दिया था। वह दिल्ली से यह कैमरा लाया था। उसने मेरे हाथ में कैमरा पकड़ाते हुए रागिनी का वीडियो बनाने की सलाह दी थी तो मुझे बहुत गुस्सा आया था।

– तुम लोग साले कभी प्यार को समझ ही नहीं सकते...

मैं बौखला कर बोला तो वह हंस दिया था।

– अपने देखने के लिए थोड़े ही बनाने को कह रहा हूं यार।

– मुझे नहीं चाहिए यह...

– फिर से भाग जायगी तो पछतायेगा कि फिल्म बना ली होती तो अच्छा रहता।

– वो प्यार करती है मुझसे... और तू चाहता है कि मैं उसे ब्लैकमेल करूं?

– तुझसे प्यार करती है, तभी तो उसके साथ सोती है। क्या नाम है उसका? ...हां, विजय।

यह कोई बॉलीवुड की फिल्म होती तो मैं उसका गिरेबान पकड़ लेता और हमारे बीच में एक दरार बनी आती, जिस पर इंटरमिशन लिखा होता। लेकिन वह मेरे बचपन का दोस्त था और सच बोल रहा था और मैं शाहरुख खान नहीं था। यह सच इतना भारी था कि फिर कुछ देर तक कमरे में चुप्पी छायी रही। फिर उसने अपने टेपरिकॉर्डर पर मोहम्मद रफी के गाने चला दिये और अखबार पढ़ने लगा। 'गुलाबी आंखें जो तेरी देखीं' के पहले अंतरे के बाद मैं निकल आया था।

मुझे दुःख था कि मैं शाहरुख खान नहीं था। मेरी उम्र के सब लड़कों को यही दुःख था। मैं न उतना खुशमिजाज था और न ही उतना हाजिरजवाब। मैं मद्धम होते सूरज और जलते हुए चांद के बीच के किसी समय में रागिनी को पहाड़ या रेगिस्तान पर ले जाकर नहीं चूम सकता था। मैं भीड़ भरी सड़कों पर चिल्ला चिल्ला कर उसे नहीं पुकार सकता था। मेरे पास उसे तोहफे देने के पैसे नहीं थे। मैं बेरोजगार था और निराश भी और मेरे बाल सफेद होने लगे थे। मैं अंग्रेजी बोलना भी नहीं जानता था। मेरे पास मोटरसाइकिल भी नहीं थी। रागिनी को बस में उल्टियां लगती थीं और चक्कर आते थे।

मैंने उस शाम लता को यह सब बताया और उसकी गोद में सिर रख कर लेटा रहा। वह मेरी बंद आंखों पर अपनी ठंडी हथेलियां रखे बैठी रही। मैं उसके या मां के पास होता था तो अपने साधारण होने की हीनता कुछ देर के लिए कम हो जाती थी। मैंने उससे कहा कि मैं बहुत कमजोर हूं और डर कर कहीं भाग जाना चाहता हूं। मैंने उसे अपने जले हुए लाल रंग के अंगारों वाले सपनों के बारे में बताया।

बहुत शोर था और मुझे कुछ सुनायी नहीं देता था। पढ़ने या टीवी देखने से मेरी आंखें दुखने लगती थीं, ब्लू फिल्म देखने से भी। सब बताते थे कि बहुत रोशनी है और मुझे कोई रास्ता नहीं सूझता था। मुझसे रंभाती हुई गायों और भौंकते हुए कुत्तों की बेबसी नहीं देखी जाती थी। लता ने मुझसे कहा कि मेरे पैरों की उंगलियों के नाखून बहुत बढ़ गये हैं। मैंने उससे कहा कि मेरा उन्हें काटने का मन नहीं करता।

बस अड्डों और रेलवे स्टेशनों पर उन दिनों 'व्यस्त रहिये मस्त रहिये' और 'जीत आपकी' जैसी किताबों की भरमार थी। मैं सब बुक स्टालों को जला देना चाहता था।

मैं निराश नहीं था, केवल उदास था और अकेली रागिनी ही इसके लिए उत्तरदायी नहीं थी। कुछ और भी था जो हममें से किसी को पता नहीं चलता था। हम सब कन्फ्यूज थे। लता ने बताया कि उसे उस पीछा करने वाले लड़के से प्यार हो गया है। मैं उतना नहीं चौंका। मैंने उसे रागिनी के

www.tadbhav.com

वीडियो के बारे में भी नहीं बताया, जो मैंने उस दोपहर बनाया था। मैं रोना चाहता था।

पिता जी किसी का उधार चुकाने के लिए बैंक से बीस हजार रुपये निकलवा कर लाये थे। शायद किसी बाहर के आदमी को भनक लग गयी होगी। उस दोपहर मैं अकेला घर में था, जब दो लड़के घर में घुस आये। बाहर का दरवाजा खुला छूट गया था। एक के हाथ में देसी कट्टा था। उसने मेरी कनपटी पर उसे रख दिया और बीस हजार रुपये मांगे। मैं डर गया। मैंने अंदर जाकर बक्से में से रुपये लाकर उसे दे दिये। वे चले गये। मैं उनके जाने के बाद चिल्लाया। गली में उस वक्त कोई नहीं था, इसलिए किसी ने उन्हें देखा भी नहीं होगा।

यह कहानी मैंने मां और पिता जी के आने पर सुनायी। उनके चेहरे, आंखों और शरीर की जो प्रतिक्रिया थी, उसे विशेषणों का इस्तेमाल करके नहीं समझाया जा सकता। उसे वह व्यक्ति कुछ कुछ समझ सकता है, जिसने आठ सौ रुपये महीना कमाने वाले स्कूल मास्टर के बच्चों को तनख्वाह वाली शाम घर की छत पर खड़े होकर पिता की बाट जोहते देखा हो। वह कुछ और अधिक समझ सकता है जिसने उनकी लकड़ी जैसी टांगों और खुरदरे हाथों पर भी गौर किया हो। वे भी कुछ कुछ समझ सकते हैं जिन्होंने जीवविज्ञान के प्रेक्टिकल में बेहोश मेढक काटते हुए गलती से उसकी आंखों में देख लिया हो या जो जेठ की गर्मी में घर्र घर्र करते टेबल फैन के आगे चौथे नम्बर की खाट पर सोया हो और उमस भरी काली रात हो, जिसमें तारे न दिखायी देते हों।

मुझे महसूस होता था कि मैं जंगल के किसी छोटे पेड़ पर बने घोंसले में बैठा नीला कबूतर हूं और पेड़ के तने के पास बहुत सारी जंगली बिल्लियां बैठी हैं। मैं उनसे प्रेम करता हूं और उन्हें भूखा मरते नहीं देख सकता, इसलिए उन्हें दूसरे कबूतरों का पता बता देता हूं। दूसरे कबूतर सफेद हैं, जिन्हें शांति की झूठी तलाश में उड़ाया गया है। बिल्लियां लड़कियों जैसी थीं।

कुछ दिनों तक रागिनी मुझसे ज्यादा बातें करने लगी थी। उन दिनों हमने बर्फ से ढके ऊंचे सफेद पहाड़ों पर तिकोनी छत वाली झोपड़ियों में हनीमून के सपने देखे। उन सपनों में हमने एक दूसरे की कसमें खायीं और चिकोटियां काटीं। हमने आंखों पर पट्टियां बांध कर एक दूसरे को ढूंढने, छूने का खेल खेला, जिसमें मैं बार बार हारा। मैंने उससे कहा कि मेरी आंखें ठीक हो जायंगी तो मैं जीतूंगा। उसने सुना और वह भूल गयी। उसने मुझसे यह भी कहा कि मैंने पहले उसे आंखों की तकलीफ के बारे में क्यों नहीं बताया? मैंने कहा कि मैंने बताया था। उसने कहा, नहीं। मुझे भी ऐसा याद आ गया कि मैंने नहीं बताया था। हम हंसे, मुस्कुराये।

हम साइकिल पर बैठ कर निकलते और वह किसी ढलान वाली सड़क पर से मुझे गहराई तक ले जाती। हम अकेले पवित्र पेड़ों पर लाल चूनरें बांधते और उनके नीचे सो जाते। सपने में सो जाना, सोते हुए सपने देखने का उल्टा था। जागने के सपनों में सो जाना दुविधा में डाल देता था कि सो रहे हैं या जाग रहे हैं? नींद के सपनों में सोना दो बार सोना था। इस तरह दो बार जागना नहीं हो सकता था। जागना एक ही बार होता। फिर भी जागना सोने से लम्बा खिंच जाता था।

मैंने एक रात सोते हुए सपने में लता को उस लड़के के साथ देखा जो उसके पीछे आता था और जिससे वह प्रेम करने लगी थी। मैं लता से उसका नाम भी पूछना भूल गया था, इसलिए वह सपने में बिना नाम के ही दिखा। मैंने लता को लगभग निर्वस्त्र देखा और चौंक कर जग गया। दुनिया का वह हिस्सा, जिसे हम अक्सर फास्ट फॉरवर्ड करके अपनी आंखों के आगे से हटा देना चाहते हैं, वही केकड़े की तरह हमारी पुतलियों पर चिपक कर बैठ जाता है और हर समय दिखायी देता है। आंखें बंद कर लेने पर भी। मैं न चाहते हुए भी उसके रिश्ते के प्रति असहज था। अपना ध्यान बांटने के लिए मैंने कुछ और चीजों के बारे में सोचना शुरू कर दिया, जैसे कश्मीर समस्या का क्या हल निकल सकता है या गोल्फ सच में कोई खेल है या नहीं? मैंने अखबार में गोल्फ खेलने वाले लोगों के बारे में

www.tadbhav.com

पढ़ा जरूर था, लेकिन मैं एक भी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानता था जिसे गोल्फ खेलना आता हो। यादव के पिता अमीर थे और उनके घर में फ्रिज भी था, लेकिन वह भी किसी ऐसे आदमी को नहीं जानता था। कुछ साल पहले तक मैं समझता था कि यह किसी जानवर का नाम है।

मैंने एक दोपहर लता से पूछा, "तुम्हारा लौंग और इलायचियों के बारे में क्या खयाल है?"

घर में हम दोनों ही थे। वह अपनी डायरी में कुछ लिख रही थी।

– खयाल मतलब क्या?

– मतलब तुम क्या सोचती हो?

वह हंस पड़ी – कोई लौंग इलायची के बारे में क्या सोचेगा भला?

– हम अपने शब्दों को खाते जा रहे हैं। मुझे लगता है कि बीस साल बाद मैं तुमसे लौंग और इलायची के बारे में पूछूंगा तो शायद तुम इनका नाम भी सालों के बाद सुन रही होगी... तुम चौंक जाओगी।

यह और बात थी कि मैं बीस साल नहीं जिया।

वह कुछ सेकेण्ड रुक कर मुझे देखती रही और फिर लिखने लगी।

– क्या लिख रही हो?

– कम्प्यूटर के नोट्स हैं...

– मुझे चिढ़ सी है कम्प्यूटर से।

– क्यों

उसने हैरानी से मेरी ओर देखा।

– यूं ही। बहुत सी चीजों से है... बिना वजह...

– तुम्हें थोड़ा आध्यात्मिक हो जाना चाहिए।

– और बादाम के बारे में तुम्हारा क्या खयाल है?

– हम उसे भी खाते जा रहे हैं। है ना?

– तुम कुछ नया नहीं सोच सकती। मुझे याद नहीं कि मैंने बादाम कब खाये थे?

– मैंने तो कभी नहीं खाये। मुझे याद है।

– अगर हम अपने दरवाजे के बाहर... दहलीज पर खड़े होकर या बेहतर होगा कि किसी ऊंचे पत्थर पर खड़े होकर चिल्ला कर यही बात कहें तो क्या लोग हमारा यकीन करेंगे?

– मुझे नहीं लगता कि मैं ऐसा चिल्लाऊंगी। चिल्लाने का मौका मिले तो मेरे पास इससे कहीं ज्यादा जरूरी बातें हैं कहने के लिए...

– मैं चिल्लाना चाहता हूं लता।

– मैं सही कह रही हूं कि तुम्हें थोड़ा धार्मिक हो जाना चाहिए।

– पहले तुमने आध्यात्मिक कहा था।

– मुझे तो दोनों एक से ही लगते हैं।

– कौन दोनों?

– तुम और बादाम।

ऐसा कह कर वह जोर से हंसी। मैं मुस्कुरा उठा।

– नाम क्या था उस लड़के का?

– किस... ('किस' पर उसका और उसकी हंसी का अचानक रुकना मुझे अच्छा नहीं लगा। मुझे उस वक्त यह नहीं पूछना चाहिए था।) लड़के का?

– जिसने पिता जी को गाली दी थी।

www.tadbhav.com

वह चुप हो गयी और चुप ही रही। मैं हमेशा बातों को गलत ढंग से शुरू करता था। मैं अक्सर वह सिरा पकड़ता था, जिसके बाद संवाद की सम्भावनाएं ही समाप्त हो जाती थीं।

मैंने कहा – मां बूढ़ी हो रही है। मां के घुटनों में दर्द रहता है।

– मां ने कहा तुमसे?

– नहीं, वह कहेगी नहीं।

– देखो तुम उन्हें बताना मत प्लीज।

– तुम भाग तो नहीं जाओगी?

– मुझे नहीं पता...

– हमारे पास कैमरा होता तो मैं तुम्हारी फोटो खींच कर रख लेता।

मैं चाहता था कि वह कह दे कि इसकी क्या जरूरत है? मैं कहीं भागी नहीं जा रही। लेकिन उसने ऐसा नहीं कहा।

मैं बोला – मुझे डर लगता है कि किसी दिन मां और पिता जी मर जायेंगे।

– यह सब मत सोचा करो। यह डर सबको लगता है।

– बड़ी बड़ी लकड़ियों पर रख कर हम खुद उन्हें जलायेंगे लता। मुझे जलाना होगा...

– अच्छा अब चुप हो जाओ बस...

– मां की आंखें भी जल जायेंगी लता... मां के बाल... मां की हथेलियां।

जाने क्या हो रहा था। मैं बेचैन हो उठा। यदि वह फिल्म का दृश्य होता तो लता मेरे लिए पानी लेकर आती। पानी पीकर मैं कुछ बेहतर महसूस करता।

– उसका नाम वीरेन्द्र है।

हम बहुत सी चीजों के बारे में कभी बात नहीं करते ना लता? जैसे हम मुर्गों और मांसाहारियों के बारे में बात नहीं करते, हम मरने और जन्म की बातों से भी कतराते हैं। हमने स्त्री और पुरुष के रिश्ते पर भी कभी बात नहीं की। मैं तुम्हें सारे सपने भी नहीं सुना सकता। मैं वे सब बातें भी नहीं बता सकता, जो मुझे दिन रात कचोटती हैं। हम सब ट्रेन में अचानक मिल गये अजनबियों या दो सभ्य साथी कर्मचारियों की तरह ही उम्र भर बात करते हैं। हम कभी शरीर की बात नहीं कर पाते, न ही आत्मा की। दार्शनिक होने का बहुत मन होता है तो भगवान की बात करने लगते हैं। मैं तुम्हारे लिए जो सोचता हूं और जो अपरिभाषित सा स्नेह मेरे पास है, वह मैं नहीं बता सकता। वीरेन्द्र या कोई और तुम्हारे जीवन के बड़े अंश पर अधिकार कर लेगा, ये सोच कर ही मैं कांप जाता हूं। यह पाप या पागलपन नहीं है। यह गंगा या सती सीता जितना पवित्र है, लेकिन कहूंगा तो पाप जैसा बन जायगा। यह अस्पष्ट और असहज है लता, जिसे कहना और सुनना ही हमें नहीं सिखाया गया। सबका जोर हमें मुहावरे, लोकोक्तियां, व्याकरण और कविताओं की सप्रसंग व्याख्याएं सिखाने पर रहा है। एक समझदार साजिश के तहत हमें यह विकल्प बताया ही नहीं गया कि कविताएं गढ़ी भी जा सकती हैं। तुम नहीं जानती लता... इस सदी के सबसे महान कवियों की कविताएं उनकी आंखों से खून बन कर टपकी हैं और तुम विश्वास नहीं करोगी, जब उन्हें पागलखानों में ले जाया जा रहा था तो उनका गर्म खून सड़कों पर कविताएं लिखता हुआ चला। बाद में इन्होंने उन सड़कों को तोड़ कर चिकने राजमार्ग बना दिये लता, जिन पर हम फर्राटे से गाड़ियां दौड़ाते हुए बड़े बड़े शहरों से और बड़े बड़े शहरों की ओर जाते हैं। स्कूल की किताबों में मैंने और तुमने उन कविताओं को कभी नहीं पढ़ा। हमने साखियां पढ़ीं और उनके ऊपर आधी छुट्टी में परांठे रख कर खाये। हम सब एक गहरे अंधेरे में हैं लता और यह पहला या आखिरी अंधकार नहीं है। हमने बड़ी बड़ी लाइटें जला ली हैं और हम अपनी अपनी रोशनी के लिए खुश हैं। हम इतने डरपोक हैं कि आंखें बंद करते हैं तो डर जाते हैं। मैं ये लैम्प, ट्यूबलाइटें,

www.tadbhav.com

बल्ब, दिये और मोमबत्तियां तोड़ कर उस लम्बे गहन अंधेरे में आंखें खोल कर सीधा तन कर खड़ा हो जाना चाहता हूं, जैसे हम स्कूल में प्रार्थना में हुआ करते थे और उसके बाद जनगणमन गाते थे। मुझमें प्रेम खत्म होता जा रहा है लता और मैं सच में तुम पर कोई आरोप नहीं लगाना चाहता, लेकिन इसकी दोषी तुम भी हो। मैं नहीं समझा सकता कि मेरा जीना कितना भयानक है? हम धर्मशालाओं में शादियां करेंगे लता, हमें रातों में किसी अकेले कमरे में छिप कर बच्चे पैदा करने होंगे और हम अपने पिताओं को जलाते जायेंगे। यह दुनिया मेरी नहीं है लता। मैं यहां नहीं रहना चाहता... मैं थूकता हूं इसके अस्तित्व पर।

मैं नहीं जानता था कि रागिनी उन बीस हजार रुपयों का क्या करेगी? पहले तो वह बुटीक खोलना चाहती थी। लेकिन वह एक इच्छा पर इतने दिन टिकने वाली नहीं थी और टिकती भी तो बीस हजार रुपयों में बुटीक कैसे खोला जा सकता था?

मैं जानता कि उसे तलाक की कार्रवाई के लिए उन पैसों की जरूरत नहीं है। वह तलाक चाहती ही नहीं थी। हम दोनों में शायद एक ही बात कॉमन थी कि हम दोनों कश्मीर जाना चाहते थे। यह भी हो सकता था कि वह उन पैसों से कश्मीर जाना चाहती हो, विजय के साथ या अकेले ही। उसे बच्चे भी बहुत पसंद थे लेकिन बच्चे पैदा करने के लिए तो पैसों की जरूरत नहीं होती। उसे लालकिला भी अच्छा लगता था लेकिन वह भी बिकाऊ नहीं था और बिकाऊ होता भी तो बीस हजार में नहीं बि. कता। हम दोनों ने एक बार साथ में लालकिला देखा था। लालकिले से लौटते हुए हम एक दूसरे किले में रुक गये थे। उस छोटे वीरान किले में एक बड़ा सा तालाब था, जिसमें सूखे पेड़ थे। मैं पत्थरों के बीच बैठा था। वह सामने इस तरह खड़ी थी कि उसका सिर थोड़ा सा हिलता था तो मुझे दोपहर का सूरज दिखायी देता था। मैंने तालाब में पत्थर फेंकते हुए उससे कहा था कि मैं उससे प्यार करता हूं। वह मेरी ओर लगातार देखती रही थी और मुस्कुरायी थी। कम्बख्त सूरज की वजह से मैं उसकी आंखें भी नहीं पढ़ पाया था। उसे अच्छा लगा था। ऐसा उसने कहा था। क्या वह उन बीस हजार में कहीं से यह अच्छा लगना खरीदना चाहती थी?

नहीं, पिता जी ने मुझे बताया था कि अच्छा लगना दुनिया के किसी बाजार में नहीं मिलता। यदि मिलता होता तो वे एक दो ट्यूशन पढ़ा कर मां के लिए थोड़ा अच्छा लगना खरीद लाते।

यादव ने भी रागिनी से यही पूछा कि उसने उन बीस हजार रुपयों का क्या किया? वह घर में अकेली थी और उसके लिए चाय बना कर लायी थी। उससे पहले यादव ने कहा था – 'बहुत सामान है तुम्हारे घर में।'

पीली छत, हरी दीवारों और फानूस वाला ड्रॉइंग रूम था – रागिनी का ड्राइंग रूम। वह खुश हुई थी और उसने कहा था कि बस जरूरत भर की चीजें हैं। फिर उसने टीवी ऑन कर दिया था। मैं या लता वैसा टीवी देखते थे तो हमें बहुत अजीब लगता था। हमारी आंखें ऊपर से नीचे चलते हुए फ्रेम की आदी हो चुकी थीं।

फिर वे दोनों दो बहनों की कहानी वाले एक धारावाहिक की बात करने लगे। उन दोनों बहनों के चेहरे एक जैसे थे। यादव ने कहा, हमशक्ल। मैं बचपन में यह शब्द बहुत मुश्किल से सीख पाया था। मुश्किल चीजें हमेशा याद रहती हैं। इसी तरह जिप वाले नेकर मुझे बहुत कष्ट देते थे। यादव ने उसे बताया कि उसे सनी देओल की फिल्में बहुत पसंद हैं और एक लड़की लगभग उसके बिस्तर पर आ गयी थी, जिसे छोड़ कर वह पांचवीं बार 'गदर' देखने पहुंचा था। रागिनी हंसी। मुझे उसका हंसना बहुत अच्छा लगता था और उसे हंसना बहुत अच्छा लगता था और इस तरह अच्छा लगना बहुत आसान था। मेरा मन करता था कि मैं उस अच्छा लगने का कम से कम आधा हिस्सा मां को दे दूं। लेकिन मां को अपने गांव वाला अच्छा लगना चाहिए था। उसके लिए हमें मां को उसके मायके छोड़ कर आना पड़ता, जहां सांय सांय करता एक उजाड़ घर था। वहां भी उसे बुरा ही लगता। मां को अच्छा लगने के लिए कम से

www.tadbhav.com

कम चालीस साल पहले जाना पड़ता, जहां वह बच्ची होती। उस स्थिति में पिता जी को भी फिर से जवान होना पड़ता। इसमें यह भी फायदा होता कि उनका पेट ठीक हो जाता। फिर वे कभी नहीं चिल्लाने की कसम भी खा लेते। इस तरह सबको मौके मिलने चाहिए थे कि लोग अपनी गलतियां सुधार सकें। गलतियों का अहसास होना और उन्हें सुधारने के लिए अतीत में न लौट पाना, गलतियां करने से भी बुरा था।

मां और पिता जी की उम्र चालीस साल कम होने पर मुझे और लता को पिछले जन्म में लौटना पड़ता। लौटते हुए रास्ते में जब वह आठ साल की होती तो स्कूल के कमरे की ढहती हुई छत का पत्थर अपने सिर पर गिरने से भी बचा सकती थी। वह पहले ही दौड़ कर आसमान के नीचे आ जाती और छत टूटने को देखने का इंतजार करती रहती। कोई और बच्चा भी उधर से गुजर रहा होता तो वह उसे आवाज लगा कर उधर जाने से रोक लेती। बच्चा उसकी बात न मानता तो वह उसे बातों में लगा लेती। बचपन से ही उसे दुनिया भर की बातें आती थीं। वह बच्चा मैं भी हो सकता था, लेकिन मैं होता तो बातों में लगने के लालच के बिना भी चुपचाप उसकी बात मान लेता। इस तरह उसके सिर पर पत्थर का गिरना और उसका एक घंटे तक दर्द से बिलबिलाना टल जाता और बरसों बाद की उसकी बीमारी, सपने, बेहोशी और कभी कभी का पागलपन भी। वैसे मां के अनुसार पागलपन तो हमारे खून में था।

पिछले जन्म में हम कुछ भी हो सकते थे। हो सकता है कि लता लड़का होती और मैं लड़की और हम भाई बहन भी न होते। वैसे मुझे विकल्प दिया जाता तो मैं कोई पक्षी बनना चाहता जैसे साइबेरियन सारस। विकल्प होने पर लता खरगोश बनना चाहती और रागिनी लड़की। उससे लड़की होना बहुत पसंद था। पिता जी लेखक बनना चाहते और मां डॉक्टर। यादव, यादव ही रहना चाहता। उसके घर में कार थी।

हां, मैं मर गया था। आंखें बहुत दुख रही थीं, इसलिए मैंने मरने से पहले रसोई में से एक कपड़ा ढूंढ कर उसे ठंडे पानी में भिगो कर आंखों पर बांध लिया था। बेकारी में मरने वाले लोग आमतौर पर सस्ती रस्सियों और छोटी लाइन की रेलगाड़ियों का इस्तेमाल करते होंगे। वैसे रेलगाड़ी खरीदनी नहीं पड़ती इसलिए बड़ी लाइन की गाड़ी के आगे कट कर भी मरा जा सकता है। सस्ती रस्सियां कई बार टूट जाती होंगी। दूसरी रस्सी खरीदने के पैसे नहीं बचते होंगे इसलिए कुछ आत्महत्याएं स्थगित भी हो जाती होंगी। वैसे मैं इस बारे में बात नहीं करना चाहता कि मैं क्यों और कैसे मरा? मुझे सहानुभूति और स्पष्टीकरण से बेहद चिढ़ थी।

वह कैमरा और उसमें बनी फिल्म यादव के पास ही रह गयी थी। उसने उसे एडिट करके फालतू दृश्य काट दिये थे। अब वह सोलह मिनट सैंतीस सेकंड की आदर्श ब्लू फिल्म बन गयी थी। उसके अपने परिष्कृत रूप में तैयार हो जाने के बाद उसने रागिनी से सम्पर्क किया और कीमत मांगी। कीमत एक लाख थी और उसी के लिए वह उसके घर आया था, जब वे दोनों हमशक्ल बहनों वाले धारावाहिक की चर्चा कर रहे थे। यादव ने फिर से उससे पूछा कि उसने उन बीस हजार रुपयों का क्या किया?

लता जिद पर अड़ गयी थी कि वह वीरेन्द्र से ही शादी करेगी। पिता जी चुपचाप अखबार पढ़ते रहे थे जिसमें मतदान के दौरान आठ जगहों पर बूथ कैप्चरिंग का समाचार था। मां उसे डांटती और रोती रही थी। मां हौद में से पानी निकाल कर पूरे घर में बाल्टियों से फेंक रही थी। फर्श को लग रहा होगा कि बारिश आ रही है और सब छतें चूने लगी हैं। छतों को लग रहा होगा कि गली का पानी घर में भर रहा है। मां कहती थी कि जो इन्सान अपने मां बाप से प्यार नहीं कर सकता, वह किसी से नहीं कर सकता। लता कहती थी कि वह वीरेन्द्र से इतना प्यार करती है कि अपनी कलाई की नस भी काट सकती है।

वे डर गये। वे इतना डरे कि मां ने रोना और पानी गिराना बंद कर दिया। पिता जी तुरंत फिल्म वाला पन्ना पढ़ने लगे जिसमें बिपाशा बसु की कोई बात थी। फिर अगले दिन पिता जी वीरेन्द्र के घर गये। उस सुबह से ही उनकी कमर में दर्द था और उन्हें झुक कर चलना पड़ रहा था। वे चलते चलते सड़क पर ही बैठ जाते थे और बैठते नहीं थे तो गिर जाते थे। एक दो बार ऐसा भी लगा कि कोई बस

www.tadbhav.com

उनके ऊपर से निकल जायेगी पर ऐसा नहीं हुआ।

वीरेन्द्र के पिता एक भले आदमी थे और सज्जन पुरुष थे और अच्छे स्वभाव के थे। वे कलफ लगा हुआ कोरा सफेद कुर्ता पहनते थे और मुस्कुराते रहते थे। वे नगरपालिका अध्यक्ष बनने का सपना रखते थे। उन्होंने पिता जी से उनकी कमर के बारे में पूछा और चिन्ता जतायी। उन्होंने कहा कि एक अध्यापक का जीवन बहुत संघर्षमयी होता है और उन्हें अध्यापकों और भिखारियों पर बहुत तरस आता है। वे एक दयालु इन्सान भी थे। कुछ मिनट बाद जब पानी आया तो उन्होंने भिखारियों वाला कथन दोहराते हुए उसके लिए क्षमा मांगी। उनका स्वभाव अत्यंत विनम्र था। उन्होंने पिता जी से कहा कि वे सिगरेट पीना चाहते हैं और क्या वे मेज पर से लाइटर उठा कर उन्हें पकड़ा सकते हैं? वे तख्त पर अधलेटे थे। पिता जी ने उठ कर लाइटर पकड़ा दिया। वीरेन्द्र के पिता को अपनी धन दौलत का जरा भी घमंड नहीं था। उन्होंने सिगरेट सुलगाते हुए, लाइटर पकड़ाने में पिता जी को हुए कष्ट के लिए माफी भी मांगी। वे बाकी अधेड़ लोगों की तरह प्रेम को सामाजिक बुराई भी नहीं मानते थे। उन्होंने खुद कहा कि वीरेन्द्र लता से बहुत प्यार करता है। वे समाज के दुख दर्द को अपना मानने वाले व्यक्ति थे। उन्होंने बताया कि वे लता की बीमारी के बारे में जानते हैं और रोग तो किसी के शरीर में भी हो सकता है। उन्होंने ईमानदारी से स्वीकार किया कि उन्हें खुद मधुमेह है। वे सत्यवादी व्यक्ति थे। विवाह सात लाख में तय हुआ। वीरेन्द्र भी लता से बहुत प्यार करता था।

फिर रागिनी यादव को अपनी शादी का एलबम दिखाने लगी थी। वह हर फोटो में मुस्कुरा रही थी। शुरू की एक फोटो में उसे सिर्फ मेंहदी से रचे हाथ कैमरे के सामने रखने थे और उसने दोनों हाथों के बीच अपना मुस्कुराता हुआ चेहरा भी रख दिया था। विदाई के समय भी वह रो नहीं पायी थी, इसलिए फोटोग्राफर ने बाद में एक और लड़की को दुल्हन बना कर तस्वीरें खींची थी और उन्हें ही एलबम में लगाया था।

यादव ने कहा कि वह सौदा नब्बे हजार में तय कर सकता है, यदि रागिनी यह बता दे कि उसने उन बीस हजार रुपयों का क्या किया? यह जानने के लिए वह बहुत उत्सुक था। वह मुस्कुरायी और अलमारी में से एक अखबार उठा कर लायी। यादव ने उसकी तारीख पर ध्यान नहीं दिया। रागिनी ने बताया कि इस दिन विजय का जन्मदिन था और वह उसे कोई सरप्राइज गिफ्ट देना चाहती थी। उसने कहा कि उसने अपने पूरे शरीर पर चार जगह उसके नाम का टैटू भी गुदवाया है। पूरा खर्च छब्बीस सत्ताईस हजार रुपये हो गया था।

वह कुछ बड़ा सोच रहा था। उसे निराशा हुई। उसे दस हजार जाने का दुःख भी हुआ। वह वे टैटू भी देखना चाहता था, लेकिन उसने ऐसा कहा नहीं। उसने अपने बैग में से एक सीडी निकाली। रागिनी अंदर वाले कमरे में गयी और पैसे ले आयी। यादव ने कहा कि वह चाहे तो सीडी चला कर चेक भी कर सकती है। उसने कहा, नहीं। यादव ने भी बिना गिने नोट अपने बैग में रख लिए। सब नोटों पर कहीं कहीं नीली स्याही भी लगी हुई थी चलते चलते यादव ने कहा कि वह बहुत सुंदर है। उसने 'शुक्रिया' कहा।

यादव ने पैंतालीस हजार रुपये मेरे मां और पिता जी को दे दिये। उस सीडी की उसने कई कॉपी बना रखी थी, जिनमें से कुछ उसके पिता के ट्रांसपोर्ट के बिजनेस के जरिये नेपाल में ले जाकर बेच दी गयी। वहां से वे भूटान, श्रीलंका, बांग्लादेश और पाकिस्तान में भी बिकीं। मेरा मृत्यु के बाद के जीवन में बहुत विश्वास नहीं था, फिर भी मैं चाहता था कि उस फिल्म के आखिर में क्रेडिट लिखे आते, जिनमें मेरे नाम के आगे 'स्वर्गीय' लिखा होता। जिन्दा लोगों को ब्लू फिल्म का एक फायदा यह भी था कि आप अपनी पीठ को पहचानना सीख सकते थे। नहीं तो हो सकता है कि किसी दिन कोई आपकी पीठ उठा कर ले जा रहा हो और आप शांत रह कर उसे देखते रहें।

उस ब्लू फिल्म से होने वाली कमाई का आधा हिस्सा यादव रॉयल्टी की तरह पिता जी को देता रहा। उसने कहा कि इसे वे मेरी अमानत समझ कर रख लें। वे रखते रहे। छः महीने बाद जब लता की शादी हुई तो उन्हें जीपीएफ से सिर्फ एक लाख निकलवाने पड़े।

जिन्दगी भी एक ब्लू फिल्म थी जिसके सुखांत के लिए हम सब नंगे हो गये थे। सुखांत सबको पसंद थे, खासकर मां और रागिनी को।

www.tadbhav.com